शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2012

हिन्दी भाषा की अस्मिताः हिन्दी में रोजगार की संभावनाएं

प्रो. माधुरी गोडबोले
सहायक प्राध्यापक, आय.पी.एस. एकेडमी, इंदौर

शोध संक्षेप

आज हिन्दी भाषा और साहित्य को वैश्विक रूप प्राप्त हुआ है। विज्ञान और तकनीक के युग के साथ हिन्दी कदमताल करती दिखाई दे रही है। जब भी भाषा का विस्तार और विकास होता है, तब उसमें एक दृष्टि और जुड़ जाती है और वह है रोजगार की संभावना। आज हिन्दी भाषा के बढ़ते चलन और वैश्विक रूप ने रोजगार की अनेक संभावनाओं को उजागर किया है। इसकी विविध क्षेत्रों में स्वीकृति और प्रयोजनीयता बढ़ने से नयी दृष्टि से हिन्दी को देखा जा रहा है। निश्चित ही इस दृष्टि में बाजार का बहुत बड़ा योगदान है। ज्ञानार्जन की अभिलाषा के कारण अनुवाद प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी भाषा के वैश्विक होते स्वरूप के साथ रोजगार की संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

भारतीय संविधान द्वारा खड़ी बोली को राजभाषा स्वीकार किये जाने के साथ हिन्दी का परंपरागत अर्थ, स्वरूप तथा अध्ययन व्यावहारिक हो गया है। हर जीवित भाषा में वैज्ञानिक, तकनीकी और उद्यमिता की संभावनाएं होती हैं व उसकी प्रयोजनीयता की भी संभावनाएं और यह हिन्दी में भी है। जब से हिन्दी राजभाषा की नवीन भूमिका में प्रस्तुत हुई है तबसे उसकी एक नए सिरे से पहचान होनी आरंभ हुई। अब वह सिर्फ साहित्यिक विधाओं में अभिव्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, अपितु रोजगार प्राप्त करने का माध्यम बनने लगी। एक नये नाम 'प्रयोजनमूलक' हिन्दी के रूप में जिसमें प्रशासन, सम्पर्क तथा संप्रेषण महत्वपूर्ण होता है।

हिन्दी ज्ञानोत्पादक भाषा बनने की प्रक्रिया से गुजर रही है और हिन्दी अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन के सन्निकट है। मानकीकरण, आधुनिकीकरण और परिवर्तनीयता के तीन आधारभूत स्तंभो के साथ व्यवहार्यता के चौथे स्तंभ पर टिकी हुई हिन्दी निश्चित रूप से भारतीयों को सम्मानजनक जीविका दिलाने में सहायक है पर इसके लिये हिन्दी में कुछ परिवर्तन करने होंगे।

जब तक कोई भाषा स्वयं को संपन्न नहीं बनाती अपने आप में एक उपकरण नही बनती तब तक वह अपनी सक्षमता को साबित नहीं कर पाती। विश्व अर्थव्यवस्था में आए व्यापक परिवर्तन भूमंडलीकरण सूचना क्रांति के पदार्पण तथा भारत के सबसे बड़े बाजार के रूप में प्रतिष्ठत होने की वजह से हिन्दी जोखिम प्रबंधन, विपणन, वाणिज्य, व्यापार एवं मीड़िया की भाषा के रूप में स्थापित होती जा रही है। शीरो ने कहा था कि ''अगर हमारे पास देने को कुछ है तो भले ही हम जंगल में रहते है। दुनिया पगडण्डी बना लेगी और उन तक पहुॅच जाएगी।

इस शोध पत्र में किसी प्रकार की आदर्शवादिता अथवा भावनात्मकता को स्थान न देते हुए कुछ व्यावहारिक संभावनाओं की तरफ इंगित करने का प्रयत्न किया गया है। प्रयोजनमूलक हिन्दी आधारित वाणिज्य, प्रशासन एवं विदेश व्यापार के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओ के जिन द्वारों को खोला है उन्हें दो स्तरों पर समझा जा सकता है–

1. राष्ट्रीय 2. अन्तर्राष्ट्रीय तथा नौकरी एवं स्वव्यवसाय के रूप में।

1. राष्ट्रीय स्तर पर –

(क) प्रशासन व सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी अधिकारी – संविधान के संशोधन 1967 के अनुसार सभी सरकारी अधिकारियों को कार्यालयीन कार्य को संपादित करने के लिये अंग्रेजी के साथ – साथ हिन्दी का उपयोग अनिवार्य होगा। आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्ति, निविदा, अनुबंध एवं विभिन्न प्रारूपों को हिन्दी मे बनाना तथा जारी करना अनिवार्य है। उसका सीधा सा अर्थ है कि केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों के सभी विभागों, उपविभागों में हिन्दी अधिकारी, अनुवादक, प्रबंधक, उप्रबंधको के रूप में रोजगार की असीम संभावनाएँ है। इसके लिये योग्यता कुछ इस प्रकार है–

1. स्नातक स्तर पर एक विषय के रूप में हिन्दी के साथ ही अनुवाद के क्षेत्र मे स्नातकोत्तर डिप्लोमा।
2. स्नातकोत्तर स्तर के साथ हिन्दी अनुवाद की योग्यता होना।

(ख) भारतीय सेना में हिन्दी अधिकारी के रूप में नियुक्ति– जिन युवाओं को सेना में जाने का आकर्षण होता है, वे अपना कॅरियर सेना में हिन्दी अधिकारी के रूप में भी बना सकते हैं।

(ग) राष्ट्रीयकृत एवं निजी बैंको मे – सभी राष्ट्रीयकृत बैंको में हिन्दी अधिकारी के पद नियुक्तियों के लिये आये दिन समाचार पत्रों में रिक्तियां प्रकाशित होती हैं। निजी क्षेत्र के बैंक जैसे आय.सी.आई.सी.आई. एच.डी.एफ.सी. आदि भी व्यवसाय विस्तार के लिये उपनगरों एवं ग्रामीण इलाकों में साधारण परिवेश के लोगो की भर्ती कर उन्हे प्रशिक्षित करके अपने नेटवर्क का विस्तार कर रहे है। अंग्रेजी बोलने वाले पब्लिक स्कूल से निकले लोगो को नौकरी देने के पारंपरिक मॉडल में बदलाव करके गांवो के सरकारी स्कूल में पढ़े स्नातक युवाओ की भी भर्ती कर रहे है। इस नीति से न सिर्फ लगातार बढ़ रही मंदी को थामने में मदद् मिल रही है बल्कि ग्रामीण और उपनगरो के बेरोजगार युवकों को भी रोजगार मिल रहा है।

(घ) अनुवादक – राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी कई प्रकाशन संस्थाएं है, जो पुस्तको के अनुवाद के लिये अनुवादक की मांग करती है। यह अनुवाद दो प्रकार का होता है – 1. अकादमिक 2. व्यावसायिक।

1. **अकादमिक स्तर** पर विभिन्न विषयों की पाठ्यसामग्री को हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के लिये हिन्दी अनुवाद की आवश्यकता होती है। एक व्यक्ति जिसे अपने विषय का ज्ञान है और जो विषयानुसार गंभीरता और संजीदगी से सहज भाषा में लिखने में सक्षम है वह अकादमिक अनुवादक के रूप में अपना करियर बना सकता है।

2. **व्यावसायिक स्तर** पर स्वव्यवसाय के रूप में अनुवाद को अपनाया जा सकता है। इन्टरनेट के माध्यम से कई विदेशी एजेन्सियों से अनुवाद के कई प्रोजेक्ट लिये जा सकते हैं। विभिन्न उपभोक्ता उत्पाद जैसे– वाशिंगमशीन, मोबाईल, मिक्सर, एयर कण्डीशनर आादि उपकरण बनाने वाली कंपनियों को उनके उपयोग से संबधित दिशा निर्देश पुस्तिका को बनाने के लिये हिन्दी लेखकों की आवश्यकता होती है। अपने उत्पाद के उपभोक्ता वर्ग का दायरा बढ़ाने के लिये उन्हें उपनगरों व ग्रामीण इलाकों तक

पहुंचना होता है। तकनीक के उपयोग का विस्तार करने व सरल बनाने के लिये हिन्दी भाषा बहुत उपयोगी है। आज किताबों के पाठक भी विभिन्न श्रेणियों के है। साहित्यिक पत्रिकाओं के अलावा विभिन्न विषयों पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही है। राजीनीति, रोमांच, रहस्य, विज्ञान फिक्शन, फंतासी आदि विषयों पर सामग्री की मांग में जहां वृद्धि हुई है वहीं व्यक्तित्व विकास व सफलता के गुरूमंत्र बताने वाली किताबों की मांग भी आश्चर्यजनक रूप से बढ़ी है और इतना ही नहीं आध्यात्मिक किताबों की मांग भी आश्चर्यजनक रूप से बढ़ी है और इनकी प्रतियॉ भी लाखो मे बिकती है। अनुवाद के लिये कई विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम चला रहे हैं–

1. हैदराबाद विश्वविद्यालय – हिन्दी विभाग – प्रयोजनमूलक हिन्दी पाठ्यक्रम
2. अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा – अनुवाद तकनीकी पाठ्यक्रम
3. दक्षिण भारतीय प्रचार सभा के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा संचालित पाठ्यक्रम
4. दिल्ली, पुणे व बनारस विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित प्रयोजनमूलक तथा हिन्दी पत्रकारिता के पाठ्यक्रम
5. अविनाशलिंगम डीम्ड यूनिवर्सिटी फॉर वीमेन – हिन्दी पत्रकारिता
6. एमिटी यूनिवर्सिटी – पी.जी. डिप्लोमा – हिन्दी पत्रकारिता
7. केरल, आंध्र बैंगलोर, अलीगढ़ इग्नू, मेरठ, भोपाल, मुंबई आादि विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित नियमित व दूर शिक्षा के पाठ्यक्रम जो मुख्यतः प्रयोजनमूलक हिन्दी व पत्रकारिता से संबंधित है।

(च) जनसंचार माध्यम – आकाशवाणी, दूरदर्शन व सिनेमा आादि के क्षेत्र में आज क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे है। विभिन्न निजी कंपनियों ने अपने स्थानीय आकाशवाणी चैनल खोल लिये है। दूरदर्शन पर निजी चैनलों की संख्या असीमित हो गई है जिनमें 24 घंटे कार्यक्रम प्रसारित करने ही होड़ है। मनोरंजन उद्योग का सालाना टर्न ओवर करोड़ो मे पहुॅच चुका है। टी.आर.पी. बढ़ाने व प्रतियोगिता में बने रहने के लिये सभी निजी चैनल नित नये कार्यक्रमों को बनाने में लगे है। विभिन्न कार्यक्रमों के निर्माण, प्रसारण, संचालन व अभिनय के क्षेत्र में आज पहले से कहीं अधिक अवसर उपलब्ध है। आर.जे., वी.जे., डी.जे. के रूप में कार्यक्रम संचालक के तौर पर एक सुनहरे भविष्य के द्वार हिन्दी के माध्यम से खुले है। कुछ प्रमुख करियर इस प्रकार है–

(1) पटकथा लेखन (2) संवाद लेखन (3) स्क्रिप्ट लेखन (4) डबिंग आर्टिस्ट

(5) गीत लेखन (6) समाचार लेखन, वाचन, संपादन आादि।

इनके लिये विधिवत प्रशिक्षण लेकर एक उत्तम जीविका के रूप में इसे अपनाया जा सकता है। इस प्रकार के लेखन के लिये एक विशेष पाठ्यक्रम को पूरा करना होता है जिसे रचनात्मक लेखन कहते है। इसका प्रशिक्षण देने वाली संस्थाएं निम्न है–

1. जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ कम्युनिकेशन
2. इग्नू द्वारा संचालित पाठ्यक्रम
3. सेंटर फॉर रिसर्च इन ऑर्ट फिल्म एण्ड टेलीविजन दिल्ली – स्क्रीन प्ले, डायलॉग, लिरिक्स व कॉपी राइटिंग में एक साल का डिप्लोपा व एडवांस पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाया जाता है।
4. फिल्म एण्ड टेलिविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया पुणे
5. डिजिटल एकेडमी फिल्म स्कूल

6. सत्यजीत रॉय फिल्म एंड टेलिविजन इंस्टीट्यूट कोलकाता – स्क्रीन प्ले
7. सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ राइटिंग इण्डियन लैंग्वेजेज, कर्नाटक

(छ) विज्ञापन एजेंसी – कॉपी राइटर, डबिंग आर्टिस्ट – विभिन्न विज्ञापन एजेन्सियों में हिन्दी कॉपी राइटर की अत्याधिक मांग है। भारतीय उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिये उसकी भाषा व भावना की समझ आवश्यक है। इसके लिये निम्न वेबसाइट ंहेण्बवउ को देखा जा सकता है।

(ज) पत्रकारिता – समाचार पत्रों व समाचार चैनलों की निरंतर बढ़ती हुई संख्या के कारण आज पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत डिमाण्डिंग हो गया है। सभी समाचार पत्रों व चैनलों को ऐसे लोगों (विशेषकर हिन्दी के संदर्भ में) की आवश्यकता है जो स्तरीय, सरल व शुद्ध हिन्दी लिखना व बोलना जानते हों। संपादक, उपसंपादक, प्रूफरीडर आादि कई पदों पर हिन्दी भाषा में आज रोजगार उपलब्ध है। इसके लिये विभिन्न विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम संचालित कर रहे है, जिसकी जानकारी पूर्व में दी जा चुकी है।

(झ) इंटरनेट – स्वव्यवसाय के रूप में

1. **घोस्ट राइटर** – यह वह व्यक्ति होता है जो केवल धन के बदले टेक्स्ट लिखता है लेकिन उसके लेखन का आधिकारिक श्रेय किसी और को मिलता है। ये खासतौर पर मशहूर हस्तियॉं, राजनीतिज्ञों और बड़े अधिकारियों के लिये आत्मकथा, लेख या अन्य सामग्री लिखते या संपादित करते है। बहुत बार इनकी मदद किताब को स्पष्ट, परिष्कृत करने या बिखरी आत्मकथा को सलीके से लिखने में ली जाती है। इंटरनेट के माध्यम से इसे पूर्णकालिक या अंशकालिक व्यवसाय बनाया जा सकता है।
2. **विज्ञान एवं तकनीकी लेखन** – आज सभी राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय समाचार पत्र–पत्रिकाएं जर्नल्स आदि की अपनी वेबसाइट्स है जिसमें विभिन्न विषयों के लेखकों के लिये नए अवसर पैदा किये है। यहां तक कि आई.बी.एम. जैसी आई.टी. कंपनियां भी अब इस क्षेत्र में आगे आ रही हैं।
3. **कंटेंट राइटर** – विभिन्न वेबसाइट की सामग्री को हिन्दी में बनाने के लिये हिन्दी लेखकों की आवश्यकता है। कम्प्यूटर के सामान्य ज्ञान से भी आजीविका कमायी जा सकती है।
4. **तकनीकी शब्दावली का निर्माण** – केन्द्र सरकार व राज्य सरकार को ऐसे लोगो की आवश्यकता है जो तकनीकी शब्दावली का निर्माण कर सके। हिन्दी पाठ्यक्रम में व्यावहारिक हिन्दी के पाठों को बना सके।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर

1. **हिन्दी का विदेशी भाषा के रूप में शिक्षण** – विश्व में भारत की मजबूत स्थिति व सबसे बड़े बाजार के रूप में परिवर्तन होने के कारण प्रत्येक देश व्यवसाय के विकास हेतु भारतीय उपभोक्ता को रिझाना महत्वपूर्ण मानता है। भारत का अधिकतर उपभोक्ता वर्ग उपनगरों एवं ग्रामीण इलाकों में फैला हुआ है और उन तक अपनी पहुंच बनाने के लिये हिन्दी की जानकारी होना अनिवार्य है। साथ ही भारतीय संस्कृति अपने आप में एक ऐसा विषय है जिसे लेकर विश्व के लोगों के मन में सदैव जिज्ञासा होती है। वर्तमान समय में आयुर्वेद, योग और आध्यात्मिक

ज्ञान ऐसे नये विषय है जो विदेशी खोजकताओं व शोधार्थियों को आकर्षित कर रहे है। इन सब कारणों से विदेशों में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण बहुत लोकप्रिय होता जा रहा है। यूरोपियन देशों जैसे अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड, पोलैण्ड, बल्गारिया समेत ऐसे चालीस देश और लगभग 160 विश्वविद्यालय है जहां हिन्दी एक विषय के रूप में पढ़ायी जाती है। क्योंकि विदेशों में आज इसे व्यवसाय की भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हो गयी है। चीन, त्रिनिदाद, नार्वे, फिनलैण्ड, हंगरी, बेल्जियम, अमेरिका, रूस, मारिशस, फिजी व इटली जैसे कई देश है जहॉ हिन्दी सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली विदेशी भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। इन विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन के लिये न्यूनतम योग्यता – पी.एच.डी. और प्रयोजनमूलक हिन्दी की उपाधि तथा ज्ञान होना आवश्यक है।

2. **विदेशों मे हिन्दी पत्रकारिता** – एशिया के प्रमुख देशों मे हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं को बड़े शौक से पढ़ा जाता है। अतः विभिन्न एशियाई देशों में हिन्दी पत्रकारिता का एक नया रोजगार क्षेत्र है। इन देशों से प्रकाशित हिन्दी पत्रिकाएं :

बंगलादेश– ढाका हिन्दी पत्रकारिता का केन्द्र है। यहॉ से कई पत्र–पत्रिकाएं लम्बे समय से प्रकाशित हो रही हैं।

नेपाल – नेपाल से प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाओं की सूची काफी लंबी है– प्रतिध्वनी, सही रास्ता, जनचेतना, रूपरेखा और विद्वान आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

बर्मा – रंगून से प्रकाशित – प्राची, कलश, जागृति, ब्रह्मभूमि आादि।

श्रीलंका – जनता, लंकादीप, वीरकेसरी।

जापान – सर्वोदय, ज्वालामुखी आादि। जापानी हिन्दी कवियों में श्री आकितों सुगितानी, तोमियो मिजाकामि व अकिरा ताकाहाशि आदि उल्लेखनीय नाम है।

चीन – चीन सचित्र।

यूरोप – हिन्दी पत्रकारिता।

रूस – युवक दर्पण, सोवियत नारी पत्र जो मास्कों से प्रकाशित होते है।

ब्रिटेन व नार्वे – अमरदीप, प्रवासिनी, शांति दूत।

अफ्रीका – विशेषकर मॉरीशस, सूरीनाम व दक्षिण अफ्रीका में क्रमशः आर्योदय, जागृति, जमाना विश्व हिन्दी जगत, आर्य दिवाकर, हिन्दी राईजिंग सन जैसी हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन।

अमेरिका – संजीवनी।

त्रिनिदाद – कोहेनूर।

फिजी – शांतिदूत, कनाड़ा – विश्व भारती, जीवन ज्योति, हांगकांग – भारतीय विविध। फिजी में *'रेडियो व दूरदर्शन* भी हिन्दी समाचारो को बढ़ावा दे रहा है।

उपर्युक्त दीर्घ सूची यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि हिन्दी पत्रकारिता व उसके माध्यम से रोजगार की संभावना तेजी से बढ़ रही है।

3. इंटरनेट पर हिन्दी भाषा शिक्षण पाठों व पोर्टलों का निर्माण करना।

उपर्युक्त विवेचन इस बात की उपयुक्त जानकारी उपलब्ध कराता है कि हिन्दी व हिन्दी भाषियों के लिये निराश होने जैसा कुछ नहीं है। आवश्यकता है इस उपलब्ध अवसर को भूनाने की। यदि हिन्दी को भूमंडलीकरण के पठल पर उभारना है तो उसे युग के वैज्ञानिक एवं तकनीकी नियमों के अनुरूप ढालना होगा तभी हिन्दी की प्रयोजनीयता का स्वरूप उभर कर सामने आएगा। आज हिन्दी में असीम संभावनाएं है क्योंकि दुनिया का

सबसे बड़ा बाजार हमारे पास है। विश्व के अन्य भाषा–भाषियों को इस बाजार में उतरने, स्थापित व सफल होने के लिये हमें व हमारी किया जा सकता है। ''हिन्दी ने सब को अपना बनाया है अब हिन्दी सब की बनेगी।'' भाषा को समझना होगा। ऐसा हो भी रहा है यदि इस अवसर का लाभ उठाया जाए तो हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में स्थापित

शोध संदर्भ :–

1. दैनिक भास्कर – लक्ष्य पत्रिका –नवम्बर 2009
2. वेब साईट – www.Employmentnews.in/carrerdetails–making-a-career-in-functional–Hindi

शोध पत्र –

1. विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता – डॉ. प्रद्युम्न मिश्र (हिन्दी विभागाध्यक्ष, वैष्णव महाविद्यालय इंदौर)
2. विश्व के प्रमुख देशों में हिन्दी का पठन–पाठन – डॉ ज्योति सिंह